S. S. College, Jehanabad

Subject – Psychology Subsidiary

B. A. Part-I – General Psychology

Teacher's Name – A. K. Sinha Date – 24.8.2020

विषयवस्तु

मानव प्राणी जन्म से मृत्युपर्यन्त कुछ न कुछ अनुक्रियाएं करते रहता है। ये अनुक्रियाएं आन्तरिक तथा बाह्य दोनों प्रकार की होती है ये अनुक्रियाएं क्यों होती हैं? कैसे होती हैं? और क्या होती हैं? इन प्रश्नों का उत्तर सामान्य मनोविज्ञान के अध्ययन द्वारा ही प्राप्त किया जा सकता है। जिसके अन्तर्गत यह स्पष्ट होता है कि प्रत्येक प्राणी प्रतिक्षण किसी न किसी परिवेश या वातावरण में रहता है जिससे उत्पन्न उद्दीपन के सन्दर्भ में ही प्राणी किसी भी प्रकार की अनुक्रियाएं सम्बन्धित उद्दीपन के प्रति सम्पन्न करता है। इसके लिए प्राणी के मस्तिष्क तथा उससे सम्बन्धित अन्तरावयव की सक्रियता सहायक होता है। प्राणी द्वारा किसी खास उद्दीपन के प्रति की जाने वाली अनुक्रियाओं से एक नया वातावरण तैयार होना दृष्टिगोचर होता है। इस प्रकार स्पष्ट होता है कि किसी भी मनोवैज्ञानिक अध्ययन के लिए वातावरण, उद्दीपन, प्राणी (मस्तिष्क तथा अन्तरावयव की सक्रियता) अनुक्रिया का मौलिक रूप से अध्ययन करना अनिवार्य होता है। इन्हीं चार स्तम्भों के आधारशिला पर मनोविज्ञान की गगनचुम्बी इमारत खड़ी करने में अनेकानेक मनोवैज्ञानिक प्रयासरत हैं।

जहाँ तक मनोविज्ञान के विषयवस्तु का प्रश्न है यह समयानुसार विभिन्न मनोवैज्ञानिकों द्वारा मनोविज्ञान की दी गई परिभाषाओं से स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है।

P.T.O. —

मनोविज्ञान की प्रारम्भिक अवस्था दार्शनिकों द्वारा दी गई परिभाषा से प्रारम्भ होता है। इस अवस्था में मनोविज्ञान का विषय वस्तु आत्मा के अध्ययन के रूप में होता है, जैसे कि प्लेटो और अरस्तू जैसे यूनानी दार्शनिकों ने मनोविज्ञान को Psychology का हिन्दी रूपान्तरण माना जिसका निर्माण Psyche + Logos शब्दों के मेल से हुआ है। Psyche का शाब्दिक अर्थ Soul या आत्मा से लिया गया तथा Logos का अर्थ अध्ययन या विवेचन है। इस प्रकार शाब्दिक अर्थ के आधार पर मनोविज्ञान को दार्शनिकों ने "Psychology is the science of soul." के रूप में परिभाषित किया जिसका विषय-वस्तु आत्मा का अध्ययन करना था। आत्मा से एक 'निराकार मनुष्य' की परिकल्पना परिलक्षित होती है, क्योंकि आत्मा एक अमूर्त तत्व है जिसका कोई स्पष्ट आकार नहीं होता है। दार्शनिकों की यह मान्यता विज्ञान की कसौटी पर खरा नहीं उतरता है भले ही यह दर्शन का एक (पहलू हो सकता है।

वैज्ञानिक प्रगति ने मनोविज्ञान से सम्बन्धित उपर्युक्त विचारधारा को नकारते हुए मनोविज्ञान को वैज्ञानिक आधार देने प्रयास में अलग-अलग परिभाषा विभिन्न मनोवैज्ञानिकों द्वारा देने का प्रयास किया गया है।

दार्शनिकों द्वारा दी गई उपर्युक्त परिभाषा के संदर्भ को संशोधित करते हुए पुनः एक परिभाषा प्रस्तुत किया गया जिसमें Psychology को

मन का विज्ञान की संज्ञा दी गई (Psychology is the Science of mind.) परन्तु यह परिभाषा भी मनोविज्ञान को वैज्ञानिक धरातल पर लाने असफल साबित हुआ। क्योंकि इसमें आत्मा के जगह पर मन (mind) शब्द का प्रयोग किया गया है जिसका कि लगभग एक ही अर्थ होता है।

मनोविज्ञान को वैज्ञानिक आधार देने का श्रेय Wilhelm Wundt को जाता है जिन्होंने Lipzig में 1879 में मनोविज्ञान की प्रथम प्रयोगशाला की स्थापना कर मनोविज्ञान का वैज्ञानिक आधारशिला रखा। इसी लिए इन्हें Father of Psychology के नाम से जाना जाता है। ऐसे तो Wilhelm Wundt मूल रूप से दर्शनशास्त्री एवं शरीरक्रियाशास्त्री थे। परन्तु मनोविज्ञान की प्रथम प्रयोगशाला की स्थापना के उपरान्त इन्हें प्रथम मनोवैज्ञानिक कहलाने का श्रेय भी प्राप्त किया। इनके अनुसार "Psychology is the Science of Conscious experience." अर्थात मनोविज्ञान चेतन अनुभूति का वैज्ञानिक अध्ययन करता है। इनके परिभाषा के अनुसार मनोविज्ञान का विषयवस्तु चेतन अनुभूतियाँ है। Wilhelm Wundt का एक शिष्य Edward Titchner ने उनकी परिभाषा को और स्पष्ट करते हुए कहा कि :—

"Psychology studies the Conscious experience of generalised normal adult human beings."

उपर्युक्त दोनों की परिभाषा से स्पष्ट होता है कि दोनों ने चेतन अनुभूति को ही मनोविज्ञान के विषय-वस्तु के रूप में स्वीकार किये हैं। इस तथ्य का समर्थन William James द्वारा दी गई परिभाषा से भी होता है जिन्होंने मनोविज्ञान को परिभाषित करते हुए कहा कि :—

"The definition of Psychology may be best given as the discription & explanation of states of Consciousness as Such."

अनेक सभी मनोवैज्ञानिकों द्वारा मनोविज्ञान के सम्बन्धित दी गई परिभाषाओं का जब गहराई से अध्ययन किया जाता है तब स्पष्ट रूप से यह दृष्टिगोचर होता है मनोविज्ञान का विषय-वस्तु चेतन अनुभूतियां हैं और इन अनुभूतियों को उत्पन्न होने में जिन-जिन तत्वों का सहयोग होता है उसकी संरचना ही चेतन-अनुभूति है। इसी लिए इन्हें संरचनावादी मनोवैज्ञानिक की संज्ञा दी गई है। चेतन-अनुभूति का अध्ययन केवल Introspection द्वारा ही किया जा सकता है। परन्तु Wundt ने ही सबसे पहले चेतन-अनुभूतियों पर प्रयोगात्मक अध्ययन को मनोविज्ञान को वैज्ञानिक धरातल पर खड़ा किया।

20 वीं शताब्दी में जब Watson द्वारा Behaviourism की स्थापना किया गया तो मनोविज्ञान की संरचनावादी मनोवैज्ञानिकों द्वारा दी गई परिभाषा को अस्वीकृत करार देते हुए कहा गया कि व्यवहार के बिना अनुभूति की कल्पना करना बुद्धिसंगत नहीं प्रतीत होता है। अन्य व्यवहारवादियों ने भी व्यवहार के बजाए अनुभूति को ही आधार माना है परन्तु इनके अनुसार मनोविज्ञान व्यवहार का अध्ययन करने वाला विषय है इस तरह इन लोगों ने व्यवहार को ही मनोविज्ञान का विषयवस्तु के रूप में स्वीकार किया है जैसा कि Mc Dougall ने परिभाषित करते हुए कहा है :—

"Psychology is the positive empirical science of the behaviour of living any creature."

इस परिभाषा का समर्थन Pillsbury द्वारा दी गई निम्नलिखित परिभाषा से भी होता है :—

"Psychology may be most satisfactorily defined as the science of human behaviour."

संरचनावादी मनोवैज्ञानिकों द्वारा दी गई परिभाषाएं यदि एकांगी हैं तो व्यवहारवादियों द्वारा दी गई मनोविज्ञान की परिभाषाएं भी एकांगी एवं एकपक्षीय प्रतीत होता है क्योंकि अनुभूति के बिना व्यवहार की कल्पना नहीं की जा सकती है।

इस प्रकार हम पाते हैं कि मनोविज्ञान के सम्बन्धित दो विचारधाराओं द्वारा दी गई परिभाषा मनोविज्ञान की सफल एवं समुचित धारणा बनाने में पूर्णता प्राप्त नहीं कर पाता है।

मनोविज्ञान की समुचित धारणा आधुनिक मनोवैज्ञानिकों द्वारा दी गई परिभाषाएं सफल प्रतीत होता है। जैसा कि आधुनिक परिभाषा में कहा गया है कि :—

"Psychology is a positive science of experience and behaviour of the organism in relation to environment."

जबकि Munn के अनुसार :—

"Psychology is concerned with the over-all adjustment of the organism to the environment."

Kagan & Havemann ने मनोविज्ञान को परिभाषित करते हुए कहा कि :—

"Psychology is the science that systematically studies and attempts to explain observable behaviour and its relationship to the unseen mental processes that go on inside the organism and to external events in the environment."

इस प्रकार आधुनिक परिभाषाओं में खासकर Kagan & Havemann द्वारा दी गई मनोविज्ञान की परिभाषा मनोविज्ञान की समुचित धारणा बनाने में सफल प्रतीत होता है। क्योंकि इन परिभाषाओं के अनुसार मनोविज्ञान न तो केवल आत्मा या मन का विज्ञान है और नहीं केवल अनुभूति अथवा व्यवहार का विज्ञान है बल्कि मनोविज्ञान अनुभूति और व्यवहार का वैज्ञानिक अध्ययन प्राणी के वातावरण में करता है। इस प्रकार मनोविज्ञान केवल वही प्राणी की अनुभूतियाँ व व्यवहार होती है। End